

प्रतिक

# मेधा में भारतीय छात्र पीछे नहीं ... लेकिन दोष शिक्षा प्रणाली का है !

**आ**ज जहाँ बिहार में छात्र अपना समय बिहार में गिरते शिक्षा के स्तर पर सेमिनार आयोजित करके गरमा-गरम बहस, विचार-विमर्श करने तथा सुधार के नाम पर राजनीतिक गतिविधियों में अपना समय बर्बाद कर रहे हैं, वहीं कुछ ऐसे भी छात्र हैं जो इस अव्यवस्था के बावजूद शोर-शराबे से दूर एकांत में अपनी शैक्षणिक साधना को जारी रखते हुए अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अपनी पहचान बनाने में सफल हुए हैं। ऐसे ही साधकों में से एक हैं "कौशल अजिताभ" जिन्होंने इसी माहौल में कदमकुआं, पटना के एक छोटे-से विद्यालय 'बाल-सदन' से अमेरिका के टेक्सास विश्वविद्यालय में गणित के व्याख्याता पद पर प्रतिष्ठित होने तक की यात्रा पूरी की है। वे पिछले पांच-छह वर्षों से अमेरिका में पठन-पाठन तथा शोध कार्य सफलतापूर्वक कर रहे हैं। अभी हाल में ही वे पटना आये हुए थे। बिहार, भारत तथा अमेरिका की तुलनात्मक शिक्षा व्यवस्था तथा गणित के अलावा अन्य कई विषयों पर उनसे लगभग तीन-चार घंटे बातचीत हुई। प्रस्तुत है इस बातचीत के मुख्य अंश :

\* आखिर क्या बात है कि आपने अपने देश को छोड़कर अमेरिका में ही पढ़ाना पसंद किया?

\* यहाँ की अपेक्षा अमेरिका में सुविधा तथा आगे बढ़ने के अवसर दोनों बहुत अधिक हैं। फिर वहाँ शिक्षा के प्रति सम्मान भी अधिक है।

\* तो क्या राष्ट्र-सेवा तथा समाज में आपका विश्वास नहीं है?

\* ये सभी बातें मुझे अपील नहीं करती हैं।

\* कहीं ऐसा तो नहीं कि कभी यहाँ की अव्यवस्था से आपका सामना हुआ हो और फिर इन बातों से आपका विश्वास उठ गया!

\* यहाँ केवल अव्यवस्था ही नहीं बल्कि सामाजिक तथा आर्थिक संकट का भी सामना करना पड़ा है, लेकिन कारण यह नहीं है। सच पुछिये तो इसके कारण को स्पष्ट तौर पर व्यक्त नहीं किया जा सकता।

\* अभी जिन संकटों की चर्चा आपने की है, वे क्या थे?

\* सामाजिक संकट के अंतर्गत अशांति मिली तथा आर्थिक संकट के कारण यहाँ कालेज के दिनों में अच्छी शिक्षा से वंचित रहा। मेरे पास इतना पैसा नहीं था कि मैं ट्यूशन पढ़ सकूँ। कभी-कभी तो जिस सवाल का हल मैं शिक्षक की सहायता से पांच मिनट में कर सकता था, उसे हल करने में पांच दिन लग जाते थे।

\* अच्छा अब बताइये कि आपने पढ़ाने के अंतर्गत भारतीय तथा अमेरिकी ... कौन फायदा?

\* बहुत हद तक तो समानता ही देखने को मिली, लेकिन भारतीय छात्रों का स्तर कम होता है। हालाँकि मेधा में भारतीय छात्र किसी भी मायने में कम नहीं होते हैं।

\* स्तर कम होने का कारण?

\* दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली।

\* इसमें सुधार कैसे हो सकता है?

\* उपाय! यह तो बहुत लम्बा-चौड़ा विषय है, लेकिन संक्षेप में, यहाँ शिक्षा का निजीकरण तथा पाठ्यक्रम में सुधार की आवश्यकता है।

\* लेकिन यहाँ तो हमेशा शिक्षा के निजीकरण का विरोध होता रहा है।

\* विरोध गलत है। ऐसा नहीं होना चाहिए। यहाँ कुछ भी निजीकरण से ही संभव हो सकता है न कि इस मूल सरकारी व्यवस्था से।

'कदमकुआं' में पला-बढ़ा और वहाँ के 'बाल सदन' में पढ़ा एक छात्र तमाम मुश्किलों के बावजूद एक लंबी दूरी तय कर टेक्सास विश्वविद्यालय में गणित का व्याख्याता बन जायेगा, यह शायद उसने और उसके घर वालों ने भी नहीं सोचा होगा। नयी पढ़ी को प्रेरणा देने वाली इस प्रेरणा का नाम है कौशल अजिताभ। दरअसल बिहार की धरती ही काफी उर्वर है। प्रतिभाएं यहाँ हमेशा ही पैदा हुई हैं, लेकिन बंजर राज-व्यवस्था के चलते बार-बार पलायन ही होता आया है। प्रस्तुत है गणित की इस प्रतिभा से एक मुलाकात



\* पाठ्यक्रम में आप कैसा सुधार चाहते हैं?

\* यहाँ विज्ञान के पाठ्यक्रम के अंतर्गत जो सवाल हल करने के लिए दिये होते हैं वे सभी बहुत पुराने हो चुके हैं। जबकि अमेरिका तथा अन्य विकसित देशों में कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिनका काम सिर्फ नये सवाल बनाना होता है। नये सवालों को हल करने से चुनौती की भावना जागृत होती है। जो रुचि बढ़ाने के लिए भी जरूरी है, लेकिन यहाँ तो कोई मेहनत करना ही नहीं चाहता है। बस दूसरी किताबों में कॉपी हो करने का काम होता है।

\* बिहार के शिक्षकों के बारे में आपकी क्या राय है?

\* अरे छोड़िये- इन बातों को। क्या कहा जाये, ये शिक्षकगण अंतर्राष्ट्रीय स्तर क्या राष्ट्रीय स्तर पर तो खरे उतर ही नहीं सकते हैं। यहाँ शिक्षा के विकास के लिए तो सर्वप्रथम उन्हीं में सुधार की आवश्यकता है।

\* हमारे देश में लोगों का कहना है कि आधुनिकतम गणित, जिस पश्चिमी देशों द्वारा स्थापित किया जा रहा है वह वेद में पहले से दिया हुआ है। बावजूद इसके 'वैदिक गणित' को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्व नहीं दिया जा रहा है। क्या यह सच है?

\* नहीं। दरअसल वेद का उद्देश्य समाज-उत्थान था कि गणित पढ़ाना। 'वैदिक गणित' तो मात्र कैलकुलेशन (गणना) तक ही सीमित है।

\* तो क्या अमेरिका और पश्चिमी देशों में भारत का गणित में कुछ भी योगदान नहीं समझा जाता है? क्या यहाँ के किसी भी गणितज्ञ को वहाँ कोई महत्व नहीं दिया जाता है?

\* नहीं, ऐसी बात नहीं है। वहाँ के लोगों का मानना है कि दशमलव पद्धति तथा शून्य से लेकर नौ तक

शून्य की खोज भारतीय गणितज्ञों ने ही की है। यहाँ के एक गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन को लोग काफी सम्मान की दृष्टि से देखते हैं।

\* गणित में सबसे बड़ा पुरस्कार "फील्ड मेडल" (नोबल पुरस्कार के समकक्ष) अभी तक किसी भारतीय को नहीं मिला है। कुछ लोग इसी राजनीति का एक हिस्सा मानते हैं तो कुछ लोग भारतीय को इस पुरस्कार के लिये अक्षम समझते हैं? आपकी क्या राय है?

\* मेरी जानकारी के अनुसार इसमें राजनीति तो चलती है लेकिन केवल एक कारण कि इसके चलते ही भारत को इस पुरस्कार से वंचित रहना पड़ रहा है, सच नहीं है।

\* "फील्ड मेडल" प्राप्त करके आप भारत को गौरवान्वित करेंगे। क्या यह उम्मीद आप से की जा सकती है?

\* देखिये, अभी मैं अपने एक विशेष "प्रोजेक्ट" पर काम कर रहा हूँ। अभी मेरी कोई ऐसी योजना नहीं है।

\* तो क्या आप अपने को इस योग्य नहीं समझते हैं?

\* समझते तो हैं, लेकिन---

\* फिर किनका क्या?

\* हाँ, समझते ही हैं।

\* अभी हाल में ही विश्व-प्रसिद्ध गणितीय समस्या "कॉन्फैट लास्ट थ्योरम" को हल करने का दावा जब प्रिन्सटन विश्वविद्यालय के प्रो. "एंड्रीव वाइल्स" ने किया तो उनका दावा भी पूर्णतः सच साबित नहीं हो सका। उस विषय पर सारे विश्व में चर्चा हुई। कुछ लोगों ने इसे सार्थक प्रयास कहा तो कुछ लोगों ने नाम कमाने का तरीका। आप क्या कहते हैं?

\* एक सार्थक प्रयास।

\* इस अव्यवस्था की स्थिति में जैसा कि आपने किया, छात्रों को आपसे बढ़ने के लिए क्या सलाह देंगे?

\* अपनी रुचि के अनुसार काम करना चाहिए। रुचि ही आपको आगे बढ़ने में सफलता दिलायेगी। यह कोई जरूरी नहीं है कि गणित पढ़ा जाये या फिर पढ़ा ही जाये। जो सच है, वहाँ काम करें।

और अंततः अभी हम लोगों को और कितना दिन इंतजार करना पड़ेगा, जब भारत गणित के क्षेत्र में अमेरिका से हाथ मिलाने योग्य होगा। कुछ ठीक से कहा नहीं जा सकता है। कई वर्ष लग सकता है। शायद २५ वर्ष, ५० वर्ष या फिर इससे भी अधिक।

आनन्द कुमार